'तनाव बढ़ा तो हालात से निपटने में स्मक्षम' जलवायु परिवर्तन का अगर पश्चिम एशिया में संघर्ष बढ़ा तो भारत बदले हालात से कैसे निपटेगा। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री असर खाने की थाली पर

हरदीप सिंह पुरी ने आदिति फडणीस के साथ साक्षात्कार में विस्तार से इसका खुलासा किया। पेश हैं प्रमुख अंश

एक समय में दो युद्ध चल रहे हैं। एक भारत के दिल और दिमाग के लिए तो दूसरा ईरान एवं इजरायल के बीच। इसका प्रभाव तेल व्यापार पर पड सकता है। यदि स्ट्रेट ऑफ होर्मुज बंद हुआ तो तेल आपूर्ति बरी तरह बाधित हो सकती है। इससे तेल की कीमतें बढ़ेंगी, जो सीधे तौर पर आम चुनाव के दौरान राजनीतिक माहौल को प्रभावित करेगा। ऐसे हालात से निपटने के लिए आपकी क्या रणनीति है?

दो अलग-अलग तरह के सवाल हैं। मैं अपने शब्द बहुत सावधानीपूर्वक चुनता हूं। लेकिन, गर्भनाल की तरह एक कड़ी है, जो दोनों संवालों को एक साथ जोड़ती है। यह चुनाव भारत के 2014 से 2024 तक विकास को बहुत अच्छी तरह दर्शाता है। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे बहुत अच्छी तरह से वर्णित भी किया है जब उन्होंने कहा कि 2014 का चनाव उम्मीदों

पर लड़ा गया था, 2019 भरोसे का चुनाव था यानी जो कहा, वही किया और अब यह 2024 का चुनाव सरकार के पिछले दोनों कार्यकाल में जनता पर पड़े प्रभाव का चुनाव है।

आज आप केवल इस बारे में बात नहीं कर रहे कि 2029 में क्या होने जा रहा है, लेकिन मुद्दा यह है कि 2047 का भारत कैसा होगा। लोगों के लिए सरकार ने क्या किया, यह सबके सामने है। हम विश्व की 10वीं सबसे बडी अर्थव्यवस्था से अब 5वीं सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन गए हैं और अगले दो साल में देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है।

ऊर्जा के मोर्चे पर यदि अर्थव्यवस्था अच्छा प्रदर्शन कर रही है तो यह स्पष्ट बात है कि आपको ऊर्जा खपत बढ़ानी होगी। यदि ऊर्जा खरीद कम होती है, तो वह भी कुछ विशेष संकेत देती है। जैसा कि विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के मामले में हुआ। वास्तव में, ऊर्जा खरीदना अकेला संकेतक नहीं है (हो सकता है उन्होंने घरेलू उत्पादन किया हो)। लेकिन यदि ऊर्जा खपत और रिफाइनिंग दोनों कम हो रही है तो समझिए वे संकट की स्थिति में हैं।

यहां एक अलग कहानी है। तीन मोर्चों पर देखिए- ऊर्जा की उपलब्धता, ऊर्जा की पहुंच और ऊर्जा स्थिरता । तीनों ही मोर्चों पर भारत का प्रदर्शन बहुत अच्छा है। भारत की ऊर्जा खपत वैश्विक औसत से लगभग तीन गुना अधिक है। अगले 20 वर्षों में विश्व की कुल ऊर्जा मांग में 25 प्रतिशत वृद्धि तो केवल भारत से होगी।

वास्तव में? क्या तेल की कमी राजनीतिक योजनाओं को प्रभावित कर सकती है?

विश्व में तेल की कोई कमी नहीं है। कुछ तेल उत्पादकों द्वारा ऐसा

करने का प्रयास किया जाता है। यदि उत्पादन सीमित हुआ, तो निश्चित रूप से इसका असर कीमतों पर पड़ेगा। आज कच्चे तेल की कीमत 87 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल है। यदि तनाव बढ़ा तो कीमतें बढ़ेंगी। आज मैंने ओपेक के महासचिव से बात की है।

तो क्या तेल कीमतों को लेकर आपकी नींद उड़ी हुई

क्या मुझे देखकर आपको ऐसा लगता है कि मैं तेल कीमतों को लेकर परेशान हूं ? कोई भी पक्ष नहीं चाहता कि संघर्ष की स्थिति काबू से बाहर हो। दूसरे, यदि तनाव बढ़ा, तो हम स्थिति को संभाल लेंगे। समय के साथ हमने इसका इंतजाम कर लिया है और तेल आपूर्ति के विभिन्न स्रोत बना लिए हैं। पहले हम 27 देशों से तेल आयात करते थे, अब यह संख्या 39 हो चुकी है। यदि एक देश या दिशा से आपूर्ति बाधित होती है तो हम दूसरी तरफ से इसे

बढ़ा देंगे। ढ़लाई का किराया थोड़ा बढ़ जाएगा। लेकिन उस स्थिति में हम खरीदार होने का कार्ड खेलेंगे। उदाहरण के लिए हम प्रतिदिन 50 लाख बैरल तेल की खपत करते हैं। यदि हम बाजार से हटे, तो उत्पादक देशों के लिए इतनी बड़ी मात्रा में अपना तेल दूसरी जगह खपाना मुश्किल हो जाएगा। इस खेल में हम बिल्कुल भी मजबूर

आप राज्य सभा सदस्य हैं। आपने पंजाब से लोक सभा चुनाव भी लड़ा है। आपने कई बार सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार किया है कि भाजपा को शिरोमणि

अकाली दल (शिअद) के साथ अपना गठबंधन तोड़ देना चाहिए। जैसा कि भाजपा ने इस चुनाव में किया है। अकेले चलना क्या समझदारी वाला कदम होगा? मैं लंबी रेस का धावक हं। मझे शिअद के साथ गठबंधन को लेकर कई मोर्चों पर दिक्कत थी। पहला, पंजाब की 117 विधान सभा सीटों में से भाजपा केवल 22 या 23 पर ही लड़ी। इस समय हम पूरे भारत में प्रसार वाली पार्टी हैं, जो 2 लोक सभा सीटों से उठ कर मौजूदा स्थिति तक पहुंची है। अब कोई यह नहीं कहता कि भाजपा बनिया या ब्राह्मणों की पार्टी है। इसके बावजुद पार्टी पंजाब की 13 सीटों में से केवल 3 पर लड़ी। मेरा मानना है कि अकेले लंडने से भाजपा को अपनी योजनाएं, कार्यक्रम और 'राष्ट्र प्रथम' की नीति को उस रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण राज्य पंजाब में पहुंचाने में मदद मिलेगी, जो पूर्व में आतंकवाद से प्रभावित रहा है। एक बात ओर, किसी भी राज्य में छोटा सहयोगी बन कर लड़ने वाले दल अमुमन गायब हो जाते हैं। दुसरी बात, लोगों के बीच अंकाली दल की छवि

अच्छी नहीं है। इसीलिए तो राज्य में आम आदमी पार्टी का उभार हुआ। तीसरे, हमें पंजाब का स्वाभिमान लौटाना है। युवा पंजाब छोड़ रहे हैं और यूरोप, कनाडा व अमेरिका में ट्रक चालक की नौकरी कर रहे हैं। क्या यह स्वाभिमान वाली बात है?

सरकार के पहले 100 दिनों में आपके मंत्रालयों (शहरी विकास और गैस एवं तेल) की क्या कार्ययोजना है? प्रत्येक मंत्रालय ने अपनी योजना सौंप दी है। पहले तो आपको सरकार बनानी है। लेकिन, हम अपनी पार्टी का घोषणा पत्र लाग करेंगे। जैसे हमने चार करोड़ घर बनाने का वादा किया है। एक करोड़ बन चुके हैं और हम तीन करोड़ घर बनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा है कि आयुष्मान भारत योजना का लाभ 70 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों को मिलना चाहिए। मेरे मंत्रालय में स्टीट वेंडरों के लिए स्विनिध योजना टीयर-2 और टीयर-3 शहरों और गांवों तक पहुंचाने की योजना है। हमारे घोषणा पत्र में इन योजनाओं को लागू करने का पुरा खाका तैयार है।



संजीव मुखर्जी और श्रेया जय

इस साल मॉनसून के सामान्य रहने की खुशखबरी मिलने के बावजूद, सभी पूर्वानुमानों में एक समान तरह की चेतावनी दी गई है कि इस साल काफी गर्मी पड़ने वाली है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) का कहना है कि अप्रैल और जन के बीच पिछले साल के मुकाबले दोगुने से अधिक 10-20 सबसे ज्यादा गर्मी वाले दिन होंगे। अधिकतम और न्यनतम तापमान दोनों ही नए स्तर को छुएंगे। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह मानव के अस्तित्व के लिए अनुकूल सीमा को भी पार कर जाएगा।

इसका लोगों के शरीर के साथ-साथ खाने की थाली पर भी सीधा असर पडेगा। अधिक गर्मी के कारण गेहं जैसे अनाज से लेकर कॉफी. डेरी और यहां तक कि हिलसा मछली तक की आपूर्ति घटने का खतरा मंडरा रहा है।

हालांकि, इस साल रबी मौसम के दौरान उगाए जाने वाले मुख्य अनाजों में से एक गेहूं इस बार तेज गर्मी के प्रकोप से बच गया है क्योंकि इसकी अधिकांश फसल पहले ही कट चकी थी या ऐसी अवस्था में थी जब गर्मी से पैदावार ज्यादा प्रभावित नहीं हो सकता था। लेकिन आशंका बनी हुई है।

लू चलने के कारण, न केवल आपकी शाकाहारी और मांसाहारी थाली की कीमत अधिक होगी बल्कि इसका स्वाद भी अलग हो सकता है। इसके अलावा, बाजारों की कीमतों में उछाल और मौजुदा आपूर्ति श्रुंखला में बदलाव की उम्मीद है।

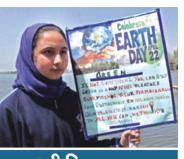
चिलचिलाती गर्मी

भारत के कुछ हिस्से में मार्च से अत्यधिक गर्मी पड़नी शुरू हो जाती है जिसके चलते गेहूं सबसे ज्यादा असुरक्षित हो जाता है। इसके बाद सब्जियों का भी कुछ ऐसा ही हाल होता है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक और उपभोक्ता देश है।

एक गैर सरकारी संगठन अनचार्टर्ड वाटर्स के ताजा शोध में 30 वर्षों के डेटा का संकलन है और इसमें कहा गया है, 'सर्दियों के बाद तेज गर्मी कई गेहूं उत्पादक महत्त्वपूर्ण राज्यों में इसकी पैदावार में लगभग 20 प्रतिशत की कमी ला सकती है। यह लगातार गर्म या ठंडे वर्षों की तुलना में पैदावर में अधिक कमी है।'

इस शोध में भी कुल गेहं उत्पादन में 5-10 फीसदी कमी के संकेत दिए गए हैं। सर्दी के मौसम में उगाए जाने वाले गेहूं की कटाई बसंत के आखिर में होती है जब गर्मी के उच्च तापमान का खतरा नहीं रहता क्योंकि इससे गेहं कि बालियां प्रभावित हो सकती हैं और इससे पैदावार पर भी असर पड सकता है। अगर इसकी बोआई देर से हो. यह औसत से कम तापमान के कारण धीमी रफ्तार से बढ़े और गर्मी की शुरुआत जल्द हो जाए तब फसलों को काफी नुकसान हो सकता है।

यही सब चीजें भारत में भी हो रही हैं। क्लाइमेट ट्रेंड्स के एक नए अध्ययन में पाया गया है कि 1970 के दशक की तुलना में मार्च के अंत और अप्रैल की शुरुआत में बेहद गर्म **डिसूजा, सोहिनी दास और अमृता** ं मौसम में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और आगे भी ऐसे ही हालात बने रहने के संकेत मिलने लगे।



पथ्वी दिवस आज

यह मोटे तौर पर वसंत ऋतु की अवधि कम होने, गर्मी के मौसम के जल्दी आने और लंबे समय तक रहने का संकेत देता है। अच्छी बात यह है कि इस साल ज्यादातर जगहों पर गेहं की बालियों के दाने भरने और पकने की अवस्था में थे तब तापमान बढ़ना शुरू हुआ था और कुछ जगहों पर दिन का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस पार कर गया, लेकिन इससे पैदावार प्रभावित नहीं हुई। लेकिन मुद्दा सिर्फ गर्मी नहीं है बल्कि बारिश और ओलावृष्टि भी वैश्विक तापमान में वृद्धि का सीधा परिणाम हैं और इससे खतरा पैदा होता है। खेतों में बारिश, बादल गरजने और ओलावृष्टि से खेतों में पानी भर जाने की खबरें पहले ही आ चुकी हैं।

आपूर्ति श्रुंखला की दिक्कतें

पारा जितना चढता है, खराबी की संभावना उतनी ही बढ़ती जाती है। उचित कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं के निम्न स्तर के चलते फलों और सब्जियों के गर्मी से होने वाले नुकसान की संभावना अधिक बढ जाती है। गर्म मौसम के कारण दुध की आपूर्ति अपेक्षाकृत तरीके से अधिक तेजी से कम हो जाती है। चंकि ताजा तरल दुध की आपूर्ति असामान्य रूप से कम हो जाती है, ऐसे में संग्रहित स्किम्ड मिल्क पाउडर (एसएमपी) पर निर्भरता बढ़ जाती है।

मार्च के बाद से ही दूध की आपूर्ति कम हो जाती है क्योंकि मवेशियों के लिए कम पानी उपलब्ध होता है और डेयरी उद्योग नियमित मांग को पुरा करने के लिए एसएमपी के भंडार पर निर्भर करता है। गर्मी के आंच से मछली भी नहीं बच पाती है। यूनाइटेड नेशंस के इंटरगर्वनमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेंट चेंज (आईपीसीसी) ने अपने एक आकलन रिपोर्ट में कहा है कि जलवाय परिवर्तन के दुष्प्रभावों से हिलसा और बॉम्बे डक जैसी व्यावसायिक मछली की प्रजातियों का उत्पादन कम हो जाएगा और कृषि में श्रम क्षमता भी घट जाएगी।

कृषि की पुनर्कल्पना

विशेषज्ञों का कहना है कि जलवाय परिवर्तन भारत में खाद्य फसलों की कीमतों में तेजी को बढ़ा देगा, जिससे आर्थिक और सामाजिक असरक्षा की स्थिति पैदा होगी। क्लाइमेट टेंडस के एक विश्लेषण के मुताबिक पिछले साल मई और जुन के बीच सामान्य खाद्य वस्तुओं की लागत तिगुनी हो गई थी। आईपीसीसी के विश्लेषण में कहा गया है कि गेहूं, चावल, दालें, मोटे अनाज और अनाज की पैदावार 2050 तक लगभग 9 प्रतिशत कम हो सकती है। देश के दक्षिणी भागों में, मक्के का उत्पादन लगभग 17 प्रतिशत तक घट सकता है।

पश्चिम एशिया में रार ने बढ़ाई चिंता

पहले हम 27 देशों से

तेल आयात करते थे,

अब यह संख्या 39 हो

चुकी है। यदि एक देश

या दिशा से आपूर्ति

बाधित होती है तो हम

दूसरी तरफ से इसे

बढ़ा देंगे

पृष्ठ १ का शेष

एशियान टी कंपनी के निदेशक मोहित अग्रवाल ने कहा, 'पश्चिम एशिया में तनाव से निर्यातकों में घबराहट है।तनाव बढ़ने से परिवहन पर असर पड़ेगा और माल के बीमा की लागत भी बढ़ जाएगी।'

भारतीय चाय निर्यातक संघ के चेयरमैन अंशुमान कनोरिया ने कि अगर ईरान-इजरायल के बीच तनाव नहीं बढता है तो असम ऑथींडॉक्स की अच्छी मांग रहेगी।

माल की आपूर्ति में ज्यादा समय लगने निर्यातकों को कारोबार का नुकसान हो

पुंजीगत चक्र भी बढ़ गया है। इंडो काउंट इंडस्ट्रीज के सीईओ और कार्यकारी निदेशक कैलाश लालपरिया ने कहा. 'केप ऑफ गड होप के जरिये माल भेजने से 35 दिन का समय लग रहा है जबकि पहले स्वेज नहर के जरिये माल भेजने में

से टेक्सटाइल कंपनियों का कार्यशील

20 दिन ही लगता था। ऐसे में हमारी कार्यशील पूंजी भी ज्यादा समय तक अटकी रहती है।'

गरोडिया ने कहा कि चुनिंदा स्टेनलेस स्टील और एल्युमीनियम उत्पादों के

रहा है क्योंकि माल की आपूर्ति में लंबा समय लग रहा है।

भारतीय वाहन विनिर्माता भी पश्चिम एशिया में संकट से कारोबार पर असर पड़ने की बात कह चुके हैं। पिछले हफ्ते कंपनी के तिमाही नतीजे जारी करने के बाद बजाज ऑटो के कार्यकारी निदेशक राकेश शर्मा ने कहा था कि ईरान-इजरायल के बीच संघर्ष बढ़ने से पश्चिमी देशों को वाहन भेजने में दिक्कत

कच्चे माल की किल्लत के कारण देश में इलेक्टॉनिक्स सेगमेंट के उत्पादों के दाम बढ़ने की आशंका है। कोड़क ब्रांड की लाइसेंसी कंपनी सपर प्लास्ट्रोनिक्स के सीईओ अवनीत सिंह मारवाह ने कहा. 'मालढलाई से लेकर कच्चे माल तक के दाम बढ़ गए हैं और चिप की भी किल्लत है। कीमतों में कुल 10 फीसदी की वृद्धि हो चुकी है और अप्रैल में एकबार और इजाफा हो सकता है।'

भारतीय फार्मा उद्योग पर अभी तनाव का असर नहीं दिखा है। फार्ममेक्सिल के महानिदेशक उदय भास्कर ने कहा कि भारतीय फार्मा का निर्यात अभी तक बेअसर रहा है।

कि अभी तक इन देशों में मांग को लेकर कोई समस्या नहीं आई है क्योंकि इन देशों में 2 से 3 महीने का स्टॉक है। मगर कार्गी की आवाजाही पर असर पड़ता है तो मालढुलाई की लागत बढ़ सकती है और उत्पादों की आपूर्ति में लंबा समय लग सकता है।

गुजरात के एक फार्मा निर्यातक ने कहा

(नई दिल्ली से शुभायन चक्रवर्ती, कोलकाता से ईशिता आयान दत्त, मुंबई से शार्लीन

बता रही रेल की रफ्तार, बने किसकी सरकार

अंडमान एक्सप्रेस में सफर कर **शुभायन चक्रवर्ती** ने जानना चाहा चुनावी माहौल में देश का मिजाज। लगभग 3,000 किलोमीटर के सफर में मोदी सरकार के ट्रैक रिकॉर्ड से प्रभावित दिखे अधिकांश यात्री।

आधी रात होने को आई. फिर भी उधमपुर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की खुब हलचल है। यात्रियों के कोलाहल के बीच निर्माण श्रमिक अलग ही शोर-शराबा कर रहे हैं, जो यहां स्टेशन के मुख्य द्वार पर धातु की छत या सायबान डाल रहे हैं। जम्मू से लगभग 70 किलोमीटर दूर भारतीय सेना की उत्तरी कमान के मुख्यालय उधमपुर में कुछ अव्यवस्था दिखाई देती है। टूटी सड़कें और खले सीवर आम बात हैं। सेना के लिए बड़े आपूर्ति डिपो उधमपुर स्टेशन पर आजकल पुनर्निर्माण कार्य चल रहा है।

यहां अपने परिवार के साथ अंडमान एक्सप्रेस में सवार होने के लिए इंतजार कर रहे 36 वर्षीय राकेश महाजन कहते हैं कि हर तरफ तरक्की देख वह काफी खुश है। मथुरा में कपड़े की छोटी सी दुकान चलाने वाले महाजन कहते हैं, 'पिछली सरकारों में कुछ भी काम नहीं हुआ। अब आप कहीं भी चले

जाइए, लगता है कि विकास कार्य हो रहे हैं।' महाजन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर में किए गए कार्यों से तो काफी ख़ुश और संतुष्ट नजर आते हैं, परंतु अपने शहर और लोक सभा क्षेत्र मथरा को लेकर थोड़े निराश दिखते हैं। वह कहते हैं पार्टी ने फिर वहां से बॉलीवुड अभिनेत्री हेमा मालिनी को मैदान में उतारा है। वह वहां से दो बार

सांसद रह चुकी हैं। अब वह जहां भी

जाती हैं, उन्हें विरोध का सामना करना

अंडमान एक्सप्रेस टेन जम्म के कटरा से चलती है और पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश होती हुई दो दिन में 2,876 किलोमीटर दूरी तय कर तमिलनाडु के चेन्नई पहुंचती है। सफर के दौरान यात्रियों के बीच सामान्य परिचय-हालचाल के बाद अमुमन बातचीत राजनीति पर आ ही जाती है। चुनाव का दौर है तो अधिकांश चर्चा इसी मौजूं के इर्द-गिर्द रहती है कि किसकी सरकार बननी चाहिए और कौन सत्ता में नहीं आना चाहिए। इंजीनियरिंग के तीसरे साल के छात्र

जितेंद्र सांब्याल जम्मू से ट्रेन में चढ़ते हैं। वह अपनी दादी का होलचाल लेने लिधयाना जा रहे हैं। बातचीत के दौरान उनकी यह बताने के लिए ज्यादा खशामद नहीं पड़ी कि वह किसे वोट देंगे। वह साफ तौर पर कहते हैं, 'मैं इस बार

> पहली बार वोट डालुंगा। मेरा वोट नरेंद्र मोदी को जाएगा। देखिए उन्होंने कितनी वंदे भारत ट्रेन शुरू कर दी हैं। इसके उलट इस ट्रेन को देख लीजिए, कितनी पुरानी लग रही

पंजाब में एक छोटे से हॉल्ट पर कुछ समय के लिए टेन रुकती है, चमकौर सिंह पानी की बोतल भर कर फिर जनरल कोच में सरक जाते हैं। सिख लाइट इन्फेंट्री में जवान सिंह दिल्ली जा रहे हैं. जहां से उन्हें नई पोस्टिंग के लिए असम जाना है। एक साल से भी कम की नौकरी में वह देश के पूर्वी हिस्से को देखने के



लिए बहुत उत्सुक हैं, लेकिन वह केंद्र में भाजपा सरकार को लेकर बहुत उत्साहित

भीड़ भरे कोच में अपने लिए जगह बनाने के लिए जद्दोजहद करते हुए सिंह कहते हैं, 'पहले की सरकारें घर से ड्यटी पर जाने वाले जवानों के लिए ट्रेन में बैठने की व्यवस्था करती थीं, लेकिन अब ऐसा नहीं है। जवानों को अपनी व्यवस्था स्वयं करनी पडती है।' चमकौर सिंह हाल ही में शुरू की गई अग्निवीर योजना को लेकर सरकार से अधिक नाराज दिखते हैं।

वह कहते हैं, 'चार साल के लिए कौन सेना में जाना चाहेगा? जब वह सेवानिवृत्त होगा तो उसके परिवार की वित्तीय सरक्षा की गारंटी कौन लेगा? वह कहते हैं कि आप अपनी नौकरी जारी रखने के लिए दोबारा आवेदन कर सकते हैं. परंत हकीकत यह है कि अधिकांश को नौकरी छोड़ने के लिए कहा जाएगा। इस योजना ने मेरे गांव के अनेक युवाओं के

सपने को चकनाचर कर दिया है।

अंडमान एक्सप्रेस में पांच जनरल कोच लगे हैं। इनमें से एक कोच में दिल्ली से चार नेपाली यवाओं का समह चढता है। ये लड़के बंगाल-सिक्किम सीमा के पास के गांव के रहने वाले हैं और चेन्नई जा रहे हैं। जब उनसे पछा गया कि उन्होंने चेन्नई जाने के लिए यह घमकर जाने वाली टेन क्यों पकड़ी, वहीं से किसी सीधी दक्षिण का रुख करने वाली टेन में क्यों नहीं बैठे, तो उन्होंने बताया कि बंगाल से दक्षिण के लिए चलने वाली किसी भी ट्रेन के अनारक्षित डिब्बे में चढना लगभग असंभव होता है।

समूह में शामिल युवा शेरिंग शेरपा ने कहा. 'आजकल दिल्ली या उत्तर प्रदेश में कोई भी काम नहीं करना चाहता। इन जगहों पर लोग उत्तर-पूर्व के लोगों को सम्मानजनक भाव से नहीं देखते। हमारे कुछ दोस्तों को यहां पीटा भी गया है। दक्षिण के बेंगलूरु या चेन्नई में इस प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता और

दिल्ली-उत्तर प्रदेश के मुकाबले वहां ठेकेदार उन्हें बेहतर मेहनताना भी देता है।'

अगली सबह जब टेन नागपर के बाहरी इलाकों से गुजरती है तो एक सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी विवेक देवघरे ट्रेन की खिड़की से इशारा करते हुए हाल ही में बने एक फ्लाईओवर के बारे में बताते हैं। वह कहते हैं, 'आप भारत में कहीं भी चले जाइए, लोग इस बात को खुलकर कहते हैं कि भाजपा सरकार में सड़कें पहले से बेहतर हुई हैं। मुझे यह बताते हुए गर्व महसूस होता है कि मैं केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के लोक सभा क्षेत्र नागपुर का वासी हूं।'

देवघरे 35 लोगों के समृह में वैष्णो देवी के दर्शन करके अपने प्रदेश महाराष्ट्र लौट रहे थे। उन्होंने परे आत्मविश्वास से कहा. 'उनके स्लीपर कोच में प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ एक शब्द सुनने को नहीं मिला।' उन्होंने अपनी बात जल्दी से परी करते हुए कहा, 'हमें ऐसे लोगों का विरोध करना चाहिए, जो सरकार के बारे में झठ फैलाते हैं।' उनकी पत्नी चंद्राबाई महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में बड़ी संख्या में किसानों के आत्महत्या करने के मामलों को गलत बताती हैं। वह फसफसाते हुए कहती हैं. 'आत्महत्या के अधिकांश मामले झुठे होते हैं। जब भी किसी बुजुर्ग की मौत होती है तो परिवार के लोग धीरे से उसकी जेब में सुसाइड नोट डाल देते हैं और पुलिस को फोन कर देते हैं। इस तथ्य को इलाके में सब जानते हैं।'

ट्रेन महाराष्ट्र के सबसे बड़े हाल्ट चंद्रपुर पहुंचती है, तो सोयाबीन पकौडा बेचने वाले हॉकर जल्दी-जल्दी डिब्बे में चढ़ते हैं। यहां 26 वर्षीय प्रकाश कुंबी कहते हैं, 'जब दूसरी रेल लाइन भी तैयार हो जाएगी तो अपनी उपज को शहर लाना

काफी सस्ता और आसान हो जाएगा। पिछले कुछ वर्षों से सोयाबीन के किसान बहुत परेशान हैं, क्योंकि हर साल बारिश उनकी फसल बरबाद कर देती है।' कुंबी का परिवार अपनी थोड़ी सी कृषि भूमि पर फली उगाता है। वह बताते हैं कि इस भूमि पर मेरे परिवार ने लोन ले रखा है।

बातों-बातों में तेलंगाना आ जाता है। मिट्टी अपना रंग बदलने लगती है और आदिलाबाद के खबसरत पहाडी जंगल दिखाई देने लगते हैं। वर्ष 2016 में यह जिला चार भागों में बंट गया। बड़ा हिस्सा कुमराम भीम जिले में आता है, जिसका नाम उन गोंड क्रांतिकारी पर था, जिन्होंने 1940 में हैदराबाद के निजाम के खिलाफ विद्रोह किया था। करीमनगर जा रहे स्थानीय स्कुल शिक्षक सुरेश व्याम गोंडा बताते हैं, 'पिछले 75 वर्षों में सरकारों से आदिवासियों को अपनी पहचान की ये एकमात्र चीज मिली है। उत्तरी तेलंगाना में पांच में से तीन विधान सभा सीट और लोक सभा क्षेत्र वर्षों से गोंड आदिवासियों के लिए आरक्षित है, लेकिन यहां के गांवों में बामुश्किल विकास के काम हए हैं।'

गोंडा कहते हैं कि उनके समदाय के अधिकांश लोग भाजपा और कांग्रेस के समर्थकों में बंटे हुए हैं। अधिकांश लोगों ने पिछले लोक सभा चुनाव में भाजपा को वोट दिया था, लेकिन उसके बाद विधान

सभा चुनाव में कांग्रेस ने अच्छा-खासा वोट हासिल किया। हिट फिल्म आरआरआर कमराम भीम के जीवन पर आधारित है। भाजपा द्वारा जिले के सबसे बड़े शहर कागजनगर में कुमुराम भीम के होर्डिंग लगाए गए हैं।

यहीं से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल से सेवानिवृत्त सिपाही राजू नासकर ट्रेन में चढते हैं। वह हजारों बांग्लादेशी शरणार्थियों की चर्चा करते हैं, जो यहां सीमाई कस्बे के ईसगांव क्षेत्र में 10 शिविरों में रह रहे हैं। वह पुलिस भर्ती की परीक्षा देने वारंगल जा रहे अपने भतीजे की ओर संकेत करते हुए कहते हैं, 'लगभग 40,000 बंगाली इस क्षेत्र में रह रहे हैं। हमारे यहां से बहुत से लड़के सेना, अर्धसैनिक बलों में हैं। हम देश सेवा के महत्त्व को समझते हैं।' नासकर के मन में आज भी इंदिरा गांधी के लिए बहुत सम्मान झलकता है, लेकिन कांग्रेस के मौजूदा नेतृत्व से उन्हें कोई उम्मीद नहीं है।

वह दावा करते हुए कहते हैं, 'कांग्रेस के शासन में हमारी सीमाएं घुसपैठियों के लिए खोल दी जाएंगी, जैसा कि असम में हुआ। बच्चा-बच्चा जानता है कि मोदी देश की सीमाओं की रक्षा कर सकते हैं। लद्दाख का मामला भी तीसरे कार्यकाल में निपटा लिया जाएगा। अब चीन डरा हुआ है।'





बैंक ऑफ़ बड़ौदा,

www.bankofbaroda.in

रिटेल, कृषि और एमएसएमई क्षेत्रों के तहत डिजिटल ऋण पहलों के क्रियान्वयन के लिए डिजाइन और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट के लिए नीतिपरक सलाहकार की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव (आरएफपी) आमंत्रित करता है। आरएफपी प्रस्तुत करने की तारीख:- 22 अप्रैल, 2024

अधिक जानकारी के लिए बैंक ऑफ़ बड़ौदा की वेबसाइट www.bankofbaroda.in पर जाएं। मुख्य महाप्रबंधक -

स्थान: मुंबई दिनांक : 22.04.2024

हिजिटल चैनल, परिचालन और रूर डिजिटल ऋण